Chhatrapati Shahu Ji Maharaj
University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 11812948

Roll No. 24040000008
Total Mark 63/75.00

Exam MA-III_ODD_EXAM_NOV_2025
Subject A020905T - Sahityalok (Sahitya Varg) (Elective)

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	4.5/5						
1B	4.5/5						
1C	4.5/5						
1D	4.5/5						
1E	4/5						
1F	4/5						
1G	4/5						
1H	4/5						
1I	4/5						
2	13/15						
3	0/15						
4	0/15						
5	0/15						
6	0/15						
7	0/15						
8	12/15						
9	0/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

Date of Exam: 13-11-2025 | Semester: IIIrd
Paper Code: A020905T | Subject: साहित्यालोक | Semester: IIIrd
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Roll No.: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 8

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri | Signature of Invigilator | COE Facsimile

PART-II

MARKS OBTAINED

Q	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures | Max. Marks
Total Marks in Words

A020905T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: M.A
Session: 2025-26 Semester: IIIrd
Subject: साहित्यालोक

महाविद्यालय का कोड / College Code: FB01
परीक्षा केन्द्र का कोड / Exam Centre Code: F801

परीक्षा का प्रकार / Type of Exam: Regular ● / Ex. Student ○ / Private ○ / Back paper Exam ○

Paper Code: A 0 2 0 9 0 5 T
Exam Date: 1 3 - 1 1 - 2 0 2 5
Name of Candidate: SHANYA AGNIHOTRI
Father's Name: ONKAR AGNIHOTRI

ANSWER BOOKLET NO.
11812948

A020905T
Paper Code

PART-IV

Enrollment Number: C S J M A 2 1 0 0 1 4 4 4 8 2

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 4 0 0 0 0 0 8

प्रश्न पत्र कोड Paper Code: A 0 2 0 9 0 5 T

Signature of Candidate: Shanya Agnihotri
Signature of Invigilator
C.S Facsimile
COE Facsimile

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below blacken the circles completely.

Correct method	Incorrect method
① ● ③ ④	✓ ✗ ◉ ◎

4. Make no Stray marks on this sheet.
5. **DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.**

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़े।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों पर दोनों तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र कोड सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1–24) से कम है या फटे हुए है, तो परीक्षा शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख, यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्षा शुरू होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पैंसिल का प्रयोग न करें।
10. B कॉपी या अतिरिक्त ग्राफ नहीं दिया जायेगा।

IN ORDER TO AVOID UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/ electronic watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-32) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g Subject Code, Subject Name and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of the commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in status as Carry Over. Those appearing as Ex Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

अनुचित साधन से बचने हेतु:

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, कॉपी, पुस्तक यह सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लैस साइंटफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमन्यता होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रुपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

INSTRUCTIONS TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numberals in ☐ Boxes.
2. Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪	⓪
①	●	①	●	①	①	①	①	●	①	①
②	②	②	②	②	②	②	●	②	②	②
③	③	③	③	③	③	●	③	③	③	③
④	④	④	④	④	●	④	④	④	④	④
⑤	⑤	⑤	⑤	●	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤	⑤
⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	⑥	●	⑥
⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦	⑦
⑧	⑧	●	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧	⑧
⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	⑨	●

Note - If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns.

खण्ड - 'अ'

उत्तर - 1(a) महाकवि बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के ख्याति प्राप्त कवि, लेखक एवं इतिहासकार हैं। उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ "कादम्बरी" संस्कृत साहित्य में एक अद्भुत एवं अन्यतम स्थान पर स्थित है।

महाकवि ने अपने वंश एवं आश्रयदाता के विषय में अपने ग्रन्थ 'हर्षचरित' में विस्तार से बताया है —

⇒ जीवन-काल :-

महाकवि बाणभट्ट कन्नौज के सम्राट हर्षवर्द्धन के सभापण्डित थे। हर्ष का राज्याभिषेक 606 ई. में तथा मृत्यु 648 ई. में हुयी थी।

इस कारण बाण का समय सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

⇒ वंशावली :-

बाण के वंश प्रवर्तक वत्स थे। वत्स के पुत्र कुबेर के चार पुत्रों में पशुपति के एक पुत्र अर्थपति हुए। अर्थपति के ग्यारह पुत्रों में चित्रभानु थे जिनसे बाण का जन्म हुआ। बाण की माता का नाम राजदेवी था।

इनका वंश वेदशास्त्र में पारंगत था।

⇒ राजसी सेवा :-

महाकवि बाण कन्नौज के सम्राट हर्षवर्द्धन की सभा के पण्डित तथा कवि थे।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

02

→ **कृतियाँ :-** महाकवि बाणभट्ट की दो मुख्य कृतियां हैं —

- **हर्षचरित :-** यह उनकी पहली कृति है। इसमें बाण ने 8 उच्छ्वासों में महराज हर्षवर्द्धन के जीवन तथा शासन काल से सम्बन्धित घटनाओं का उल्लेख किया है।

- **कादम्बरी :-** यह महाकवि की एक अद्वितीय रचना है। इसमें चन्द्रापीड एवं वैशम्पायन की क्रमशः कादम्बरी एवं महाश्वेता से [illegible]आख्यान वर्णित है। यह बाण की पूर्ण [illegible]लसित पाण्डित्य एवं कवित्व की उत्[illegible] कृति है।

उपर्युक्त रचनाओं के अतिरिक्त चण्डीशतक भी बाण की कृति मानी जाती है।

→ **योगदान :-** महाकवि बाण की कृतियां भारतीय साहित्य में संस्कृत काव्य साहित्य एवं शास्त्रीय साहित्य के लिए एक अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

महाकवि की भाषा अलंकार युक्त है तथा भावों का चित्रण बड़ी गहराई से किया है।

उत्तर - 1 (ख) महाकवि बाणभट्ट की गद्यकाव्य में कादम्बरी एक अमर कृति है। इसमें तीन जन्मों की कथा का वर्णन मिलता है। चन्द्रापीड राजा तारापीड का पुत्र है जो कादम्बरी से प्रेम करता है।

उसके चरित्र की कतिपय विशेषताएं इस प्रकार हैं —

- महाप्रतापी :- चन्द्रापीड एक महान प्रतापी राजा था। जिसके राज्य में सर्वत्र सुखी का वातावरण व्याप्त था। वह एक महान योद्धा तथा वीर था।

- रूप सौन्दर्य :- चन्द्रापीड का रूप अत्यन्त ही मनमोहक था। कादम्बरी ने जब पहली बार उसे देखा तब वह उस पर मुग्ध हो गयी थी।

- गुणवान् :- चन्द्रापीड वीर एवं साहसी होने के साथ ही अत्यन्त गुणवान एवं ज्ञानी भी था। जब वह जाबालि मुनि के आश्रम में गया तब उसने मुनि के साथ ध्यान, आत्मादि विषयों पर गम्भीर चर्चा भी की थी।

- सच्चा प्रणयी :- चन्द्रापीड एक सच्चा प्रणयी था। वह कादम्बरी से अत्यन्त प्रेम करता था। कादम्बरी के विरह में उसने अपने

Do Not Write anything in this Portion

प्राण तक त्याग दिए थे।

इस प्रकार,
महाकवि ने चन्द्रापीड को एक सच्चा प्रणयी, साहसी, वीर, गुणी एवं योग्य राजा के रूप में चित्रित किया है।

उत्तर -1 (ए) 'कादम्बरी' महाकवि बाण की एक अनुपम तथा अद्वितीय कृति है। बाण ने इसमें अनेक पात्रों का उनकी भावनाओं का अत्यन्त सूक्ष्म एवं सुन्दर चित्रण किया है।
इन्हीं पात्रों में एक विशिष्ट पात्र है 'राजा शूद्रक', जो कि 'विदिशा नगरी' का राजा है।
महाकवि ने शूद्रक - वर्णन में राजा शूद्रक को एक महाप्रतापी, चक्रवर्ति, एवं योग्य शासक बताया है तथा उसकी राजधानी आदि का वर्णन किया है —

शूद्रक वर्णन का वर्ण्य - विषय :-

•1- महाप्रतापी एवं चक्रवर्ति :- महाकवि ने सर्वप्रथम राजा शूद्रक की विशेषताओं का वर्णन किया है।

• राजा शूद्रक को महाप्रतापी, चक्रवर्ति राजा के रूप में बताया गया है। बाण उसके विषय में स्वयं कहते हैं —

- "चक्रवर्तित लक्षणोपेत: रविरिव - - -"

- राजा शूद्रक को दूसरे इन्द्र के समान बताया गया है।

- सभी अन्य राजा उसकी आज्ञा को शिरोधार्य करते हैं।

2- महा ज्ञानी :- शूद्रक की एक अन्यतम विशेषता उसका वीर के साथ - साथ महान ज्ञानी भी होना था।

- वह समस्त शास्त्रों में पारंगत था। तभी मंत्री कुमारपालित आदि जैसे विद्वान स्वयं को उसके आश्रय में पाकर कृत-कृत्य मानते थे।

- राजा शूद्रक के ज्ञान के विषय में बाण स्वयं कहते हैं —

"वाचि सरस्वत्यां प्रज्ञां सुगुणानां।"

3- विदिशा नगरी का वर्णन :- राजा शूद्रक की वीरता एवं साहसी तथा ज्ञानादि का वर्णन करने के उपरान्त महाकवि उसकी राजधानी विदिशा नगरी का वर्णन करते हैं —

- वह राजा शूद्रक विदिशा नगरी का राजा है। वह नगरी अत्यंत आकर्षक है।

- विदिशा को चारों ओर से सागर ने मेखला

Do not write anything in this portion

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

06

के समान घेरा हुआ है।

- नगरी का वैभव अपने अन्यतम स्तर पर है। भवन / प्रासाद अलौकिक हैं।

- वहाँ कि प्रकृतिक सौंदर्यता अनुपम है। वृक्षों, फूल, पशु, पर्वत, नदी आदि का वर्णन कवि ने अत्यन्त गम्भीरता से किया है।

इस प्रकार,
राजा शूद्रक उसकी नगरी का वर्णन करते हुए कवि ने दरबार, की भव्यता आदि का मनमोहक एवं आकर्षक वर्णन किया है।

उत्तर-3(a) महाकवि बाणभट्ट प्रणीत 'कादम्बरी' में विन्ध्याटवी वर्णन अत्यन्त प्रभावशाली एवं रोचक है।
महाकवि ने विन्ध्याटवी का वर्णन करते हुए मानो उसे पाठक / श्रोता की आँखों के सामने जीवंत ही कर दिया है।

विन्ध्याटवी वह स्थान है जहाँ वैशम्पायन और महाश्वेता मिले थे।

विन्ध्याटवी की भयंकरता का वर्णन बाण ने सजीव रूप से चित्रित किया है —

1. भयानक वातावरण :-
विन्ध्याटवी विन्ध्य पर्वत

07

की तलहटी में बसा हुआ है। उसके चारो ओर वृक्ष एवं बड़े - बड़े, ऊँचे - ऊँचे पर्वत हैं।

जिससे सूर्य की रोशनी भी वहाँ नहीं आ पा रही है।

2- पशु एवं पक्षियों का वर्णन :-

• विन्ध्याटवी की गुफाओं से अनेक जंगली जानवर- सिंह, व्याघ्र, रुरु मृग, गर्जना करते हुए निकलते थे।

• कोयलादि की आवाज वहाँ सुनायी नहीं देती थी वहाँ तो उल्लू - गिद्ध - काक की भयंकर आवाज गुंजायमान रहती थी।

• वहाँ की निर्जरता का वर्णन करते हुए बाण कहते हैं—

वहाँ पहुँचकर ऐसा लगता था मानो कि यमराज के द्वार आ गए हैं और व्यक्ति का उत्साह लुप्त हो जाता था।

3- भीषणता :-

• पत्थरों का गिरना तथा अचानक बिजली के चमकने से वृक्षों का काले रूप में दिखायी देना किसी भयानकता से कम न था।

• वहाँ चारो ओर कटीली झाड़ियाँ थी।

इस प्रकार,

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

महाकवि बाण ने विन्ध्याटवी की भयंकरता एवं भीषणता का सजीव चित्रण किया है।

उत्तर-1(E) नैषधीयचरितम् महाकवि श्री हर्ष प्रणीतम् एक महाकाव्य है। इसमें 22 सर्ग हैं।
यह महाभारत के वन पर्व के नलोपाख्यान से उद्धृत है तथा महाकवि ने अपने विचार एवं कल्पना के आधार पर कुछ परिवर्तन किए हैं।

नैषधीय-चरितम् राजा नल एवं दमयन्ती की प्रणयकथा वर्णित है।
प्रथम सर्ग का कथानक इस प्रकार है –

प्रथम सर्ग का आरम्भ राजा नल के गुणों के वर्णन से होता है। राजा नल निषध देश का एक महाप्रतापी राजा है। वह अत्यन्त वीर, साहसी एवं अलौकिक रूप से युक्त है।
~~[illegible]~~ दमयन्ती एवं नल दोनों एक-दूसरे के गुणों का व्याख्या अन्य व्यक्ति से सुनते हुए एक-दूसरे में अनुरक्त हो जाते हैं।
राजा नल जब वृद्ध पुरुष से दमयन्ती के रूप-सौन्दर्य एवं गुणों के बारे में सुनता है तब वह उस पर अत्यन्त मुग्ध हो जाता है। उसकी आसक्ति जब अत्यधिक बढ़ जाती है तब वह अपने मित्र के साथ सरोवर के पास आ जाता है। वहाँ वह सरोवर में एक अलौकिक राजहंस को देखकर उसे

पकड़ लेता है। जब राजहंस की करुणता को देखकर वह उसे छोड़ भी देता है।

फिर हंस अब यह प्रतिज्ञा करता है कि वह दमयन्ती के मन में भी राजा के प्रति अनुराग उत्पन्न करेगा।

वह कुण्डिनपुर की ओर चलने लगता वहाँ दमयन्ती अपनी सखियों के साथ क्रीडा कर रही होती है दमयन्ती राजहंस को पकड़ने के लिए उसके पीछे - पीछे आ जाती है। तब राजहंस राजा नल के गुणों का बखान कर दमयन्ती के मन में अनुराग उत्पन्न करता है।

दमयन्ती अपने महल में पहुँचकर विरह के कारण मूर्छित हो जाती है तब राजा भीम उसका स्वयंवर करते हैं।

स्वयंवर में इन्द्रादि राजा भी विवाह के लिए आते हैं। परन्तु दमयन्ती की नल के प्रति निष्ठा एवं प्रेम को देखकर राजा नल और दमयन्ती का विवाह करा दिया जाता है।

⇒ नैषधीयचरितम् को पञ्च महाकाव्यों में एक माना जाता है।

उत्तर-1(ख) दमयन्ती महाकवि श्रीहर्ष के द्वारा रचित महाकाव्य नैषधीयचरितम् की नायिका है। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

- अत्यन्त रूपवती :-

दमयन्ती अत्यंत रूपवान् है उसका सौन्दर्य अलौकिक है। उसके अलौकिक सौन्दर्य के कारण ही इन्द्रादी देवता भी उससे विवाह

करना चाहिते है। राजा नल उसके सौन्दर्य पर आसक्त है।

- गुणवान :- दमयन्ती अत्यंत गुणवान् है, उसमें स्त्रीपरक लज्जा व मर्यादा भी निहित है।

- निष्ठावान :- दमयंती की राजा नल से अनन्त प्रेम एवं निष्ठा है अपनी निष्ठा के कारण ही दमयन्ती का नल से मिलन होता है।

इस प्रकार, महाकवि ने दमयन्ती में स्त्रीयोचित समस्त गुणों का समावेश किया है

उत्तर-(g) 'नैषधीयचरितम्' के विषय में प्रसिद्ध है —
"नैषधं विद्वदौषधम्"
अर्थात्

नैषधीयचरितम् विद्वानों की औषधि है,

इसके प्रमुख कारण हैं:—

- शिक्षाप्रद :- नैषधीयचरितम् मात्र एक मनोरंजक काव्यकाव्य ही नहीं है, बल्कि यह धर्म, नीति, सत्य, प्रेम आदि की शिक्षा भी देता है।

इस प्रकार यह अज्ञान का नाश करता

है।

• साहित्यिक दृष्टि से :-

महाकवि हर्ष ने इसमें सुसंस्कृत, शृंगारित एवं अलंकार युक्त भाषा शैली का प्रयोग किया था।

इस कारण यह साहित्यिक ज्ञान भी प्रदान करता है।

उक्त:
"नैषधं विद्वदौषधम्"।

उत्तर-1(क) महाकवि बिल्हण संस्कृत साहित्य के मध्यकालीन प्रसिद्ध कवि थे। इनके विषय में जानकारी इस प्रकार है —

जीवन काल एवं परिवार :-

• बिल्हण का जन्म 10 वी. – 11वी. शताब्दी में हुआ था।

• इनका जन्मस्थान उत्तरी या मध्य प्रदेश में था।

• इनके परिवार के विषय में कहा जाता है कि ये –
ब्राह्मण वंश से उत्पन्न थे।

Paper Code

12

शिक्षा एवं विद्वता :-

• महाकवि ने संस्कृत की अत्यन्त गहन शिक्षा प्राप्त की थी।

• उनकी भाषा शुद्ध, साहित्यिक एवं अलंकारपूर्ण थी।

कृतित्व :-

• महाकवि की सुप्रसिद्ध एवं प्रमुख कृति 'विक्रमांकदेव चरितम्' है।

• इसमें उन्होंने कश्मीर के राजा विक्रम देव का वर्णन किया है।

उत्तर-1 (ड) 'विक्रमांकदेव चरितम्' महाकवि विल्हण का एक अद्भुत काव्य है जो कि संस्कृत साहित्य की मध्य काल की शैली में रचा है।

कवि ने इसमें शुद्ध संस्कृत भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा-शैली अलंकार पूर्ण तथा भाव गम्भीर्य है।

कवि ने प्राकृतिक चित्रण में पेड़-पौधों, पशुओं, नदी-पर्वतों आदि का वर्णन करते हुए उन्हें जीवंत रूप प्रदान कर दिया है। कवि ने उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, श्लेष आदि अलंकारों का उपयोग किया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

13

खण्ड - स :

उत्तर - 8 महाकवि बाणभट्ट के द्वारा रचित कादम्बरी गद्यकाव्य संस्कृत साहित्य में एक अन्यतम स्थान पर प्रतिष्ठित है। इसमें बाण ने प्रत्येक पात्र का अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया है।

इन्हीं पात्रों में एक पात्र चाण्डाल कन्या का भी है। इसके वर्णन में कवि ने अपनी अलौकिक प्रतिभा का वर्णन किया है —

चाण्डालकन्या के रूप - सौन्दर्य का इतना अलौकिक वर्णन कवि ने अपने विरोधाभास अलंकार से किया है। —

अर्थात

चाण्डाल कुल में उत्पन्न होने के बाद भी उसे एक अप्सरा के समान सुन्दर बताया है

चाण्डाल कन्या की कुछ चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं —

1- उसका प्रकट होना ! —

'कादम्बरी कथामुखम' में चाण्डाल कन्या राजा शूद्रक के दरबार में आती है। वह अपने साथ एक शुक - शिशु को लाकर उसकी विद्वता का वर्णन करते हुए राजा शूद्रक के योग्य बताती है। और उस शुक - शिशु को उन्हें भेंट करती है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

2- अलौकिक सौन्दर्य :-

चाण्डाल कन्या का रूप-सौन्दर्य अलौकिक है। वह चाण्डाल कुल में उत्पन्न होकर भी किसी देवांगना से कम नहीं लगती है।

स्वयं राजा शूद्रक चाण्डाल कन्या के सौन्दर्य को देखकर अत्यन्त मोहित हो जाता है। और कहता है कि,

ईश्वर ने वर्ण के स्थान पर ही अपनी प्रतिभा दिखा दी है। अर्थात्,

वह आश्चर्य में है कि एक चाण्डाल कन्या इतने अलौकिक रूप की कैसे हो सकती है।

3- गुणवान एवं मधुभाषी :-

चाण्डाल कुल में उत्पन्न होने के कारण उसमें कोई दुर्व्यवहार नहीं है। वह अत्यन्त गुणवान एवं मधुर भाषी है।

वह शूद्रक के सामने अत्यन्त आदर एवं मधुरता पूर्वक शिष्ट व्यवहार करती है।

इस प्रकार,

महाकवि बाण ने चाण्डाल कन्या के रूप में एक ऐसे चरित्र को चित्रित किया है जिसमें,

सभी गुण, मधुरता, रूप-सौन्दर्य विद्यमान है।

निम्न कुल में उत्पन्न हो कर भी उसमें शिष्टता विद्यमान है।

खण्ड - 'ब'

उत्तर - 2 अतिचिरकाल - - - - - - - - - - - - नारायणस्य।

सन्दर्भ :-

प्रस्तुत गद्य खण्ड महाकवि बाणभट्ट कृत अमर कृति 'कादम्बरी' के शूद्रक वर्णन से उद्धृत है।

प्रसंग :-

उपर्युक्त गद्य में महाकवि ने अपनी अलौकिक प्रतिभा द्वारा राजा शूद्रक के गुणों का बखान किया है —

अर्थ :-

हजारों सालों तक दुष्ट राजाओं के रूप में लगे हुए कलंक को राजा शूद्रक अपनी तलवार (खड्ग) से स्वच्छ कर रहे हैं और राज लक्ष्मी प्रकाशित होकर उनमें निवास करती है। राजा शूद्रक के मन में धर्म, क्रोध में यमराज, महल में कुबेर, प्रताप में अग्नि, भुजाओं में पृथ्वी, दृष्टि में लक्ष्मी, वाणी में सरस्वती, मुख में चन्द्रमा, बल में वायु, प्रज्ञा (बुद्धि) में बृहस्पति, तेजस्वीता में सूर्य है। जिससे सर्वदेव स्वरूप, विश्वरूप भगवान नारायण भी उसका (रूप का) अनुकरण करते है।

व्याख्या :-

राजा शूद्रक की वीरता का वर्णन करते हुए कवि कहते हैं।—

जिस प्रकार, धोबी किसी वस्त्र को गंदे से

जाने पर जल से साफ कर लेते हैं उसी प्रकार राजा शूद्रक ने दुष्ट राजाओं रूपी कलंक को जो कि हजारों वर्षों तक भूमि पर लगा रहा उसे अपनी ~~कर~~ तलवार से धो दिया है अर्थात् साफ कर दिया है।

राजा शूद्रक के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए भगवान विष्णु तक को उनका अनुकरणीय बताया है।

काव्यगत् सौन्दर्य :-

- अलंकार - उपमा (तुलनार्थ में)

  अतिशयोक्ति

  सम्पूर्ण पृथ्वी को साफ करने के अर्थ में।

- महाकवि की भाषा - शैली संस्कृत एवं अलंकार पूर्ण एवं छन्दबद्ध है।

- यहाँ उन्होंने राजा शूद्रक के अलौकिक सौन्दर्य को भगवान विष्णु, जोकि स्वयं विश्वरूप हैं (गीतानुसार) उनका अनुकरण करने वाला बता दिया है।

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

Paper Code

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

22

Do Not Write anything in this Portion

X

Paper Code

Paper Code

24

Do Not Write anything in this Portion

X